उष्ण मरुस्थलों में मानवीय क्रिया - कलाप

Vishal
V.S.S.J. College

(Human activities in hot deserts)

(A) Location (स्थिति) → उष्ण मरुस्थल 20° - 30° अक्षांशों के बीच महाद्वीपों के प० भाग में हैं। ये व्यापारिक वायु की वृष्टिछाया में पड़ते हैं।

क्षेत्र - (i) एशिया → Middle East, बलुचिस्तान, सिन्धु बेसिन, थार।
(ii) अफ्रिका → सहारा, नामिब, कालाहारी मुख्य।
(iii) प० आस्ट्रेलिया
(iv) उ० अमेरिका, द० प० U.S.A
(v) द० अमेरिका → अटाकामा।

भौतिक पर्यावरण →

(a) ताप → ताप 10°C से 58°C, अत्यधिक दैनिक तापान्तर (10°-40°C) रहता है। Dust devils चलते हैं। द० गोलार्द्ध में सामुद्रिक प्रभाव के कारण ताप एवं तापान्तर अपेक्षाकृत कुछ कम है।

(b) वर्षा → व्यापारिक वायु की वृष्टिछाया में होने से वर्षा सिर्फ 1.5 cm से 25 cm होती है।

(C) प्रा० वनस्पति → शुष्कतासह्य खजूर, बबूल, नागफनी, कँटीली झाड़ियाँ (Xerophytes) हैं। नखलिस्तानों में कुछ हरियाली नजर आती है।

मानवीय क्रिया - कलाप →

(A) कृषि → रेतीली भूमि, बालुकास्तूपों, उच्च ताप, अल्प वर्षा आदि के कारण कृषि दशा दयनीय है। सिर्फ नखलिस्तानों, आर्टिजन कूप क्षेत्रों (Australia की आर्टि० बेसिन), नदियों (नील, दजला-फरात, सिन्धु) के किनारे कुछ गेहूँ, ज्वार - बाजरा, दलहन, कपास, तम्बाकू, मक्का, तरबूज, खरबूजे, सब्जी आदि उपजा लेते हैं।

(B) भोजन → खजूर "मरुस्थल की रोटी" है। गेहूँ, जौ, मक्का, दाल एवं भेड़, बकरी, ऊँट का माँस खाते हैं। भेड़, बकरी, ऊँट का दूध पीते हैं। चमड़े की थैली में दूध, पानी रखते हैं।

(C) वस्त्र → गर्मी से रक्षार्थ ढीला लबादा, पजामा पहनते हैं। Dust devils से रक्षार्थ सिर और मुँह को ढक कर रखते हैं। शीतकाल एवं रात में ठंड से रक्षार्थ ऊनी चादर, कम्बल, गलीचा आदि का उपयोग करते हैं।

(D) गृह → अधिकांश घुमक्कड़ होते हैं। अतः स्थाई घर नहीं बनाते जल स्रोतों के पास स्थाई घर होता है। घर को ठंडा रखने के लिए मिट्टी या पत्थर की मोटी दीवार बनाते हैं। कम वर्षा

Scanned with CamScanner

के कारण चपटी (Flat) छत बनाते हैं। इनके खजूर के लकड़ी, पत्तियाँ, मिट्टी या पत्थर की होती हैं।

(E) खनन (Mining) →

क्षेत्र	खनन-कार्य
प० आस्ट्रेलिया, कोलोराडो, एरिजोना	सोना, चाँदी, ताँबा। प० आस्ट्रे० में कालगुर्ली, कुलगार्डी प्रमुख स्वर्ण-क्षेत्र हैं।
अटाकामा	शोरा, चाँदी, लौह-पत्थर, ताँबा
कालाहारी	ताँबा
साल्टलेक (U.S.A) चाड (सहारा), साँभर (थार)	नमक
पीरु तट	ग्वानो उर्वरक
Middle east	पेट्रोलियम

(F) उद्योग-धंधे → लोमड़ी, सियार, खरगोश, गीदड़ आदि का शिकार करते हैं। खजूर, नमक, गोंद एवं लोबान एकत्र करते हैं। कम्बल, कालीन, चमड़े के मशक, ढोल, थाली, खजूर के पत्तों से चटाई, टोकरी, तनों से गिलास, सन्दूक, कुर्सी, बेंच बनाते हैं। वस्तु-विनिमय होता है। यात्रियों को यात्रा कराना भी प्रमुख उद्यम है।

(G) निवासी → एशियाई उष्ण मरुस्थलों में बद्दू, सहारा में तुआरेग, कालाहारी में बुशमैन एवं हॉटेण्टाट निवास करते हैं। शरीर प्रायः हृष्ट-पुष्ट और कद लम्बा होता है। बुशमैन अपवाद हैं। प्राकृतिक आपदाओं को सहने के आदि होते हैं। डाकुओं से रक्षार्थ ये कॉरवा में काफिले के साथ चलते हैं। भाला-संचालन एवं घुड़सवारी में निपुण होते हैं। एकान्त वातावरण के कारण विचारशील एवं दार्शनिक होते हैं। रात में तारों की सहायता से मार्ग निर्धारण करते हैं। खुले आकाश के कारण ये ज्योतिष एवं गणितशास्त्र में निपुण होते हैं जैसे मिस्र, अरब में।

परिवहन के साधनों का अभाव है। ऊँट (Ship of the desert), घोड़े, खच्चर की सवारी करते हैं। नील, दजला-फरात में नाव से परिवहन होता है।

जन घनत्व अति न्यून (1-5/km²) है।

यहाँ 5 प्रकार के निवासी हैं —:

(i) आदिवासी शिकारी (बुशमैन), (ii) खानाबदोश (बद्दू, तुआरेग), (iii) स्थाई कृषक (मरूद्यानों, सिंचित क्षेत्रों में), (iv) कारवाँ व्यापारी, (v) खनिज क्षेत्रों के निवासी।

प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण ये क्षेत्र "Region of everlasting difficulties" हैं। ये आर्थिक दृष्टि से अति दुर्बल क्षेत्र (Regions of debilitation) हैं।

—x—